Procedure To Do Baglamukhi Havan Yagya Or Homam

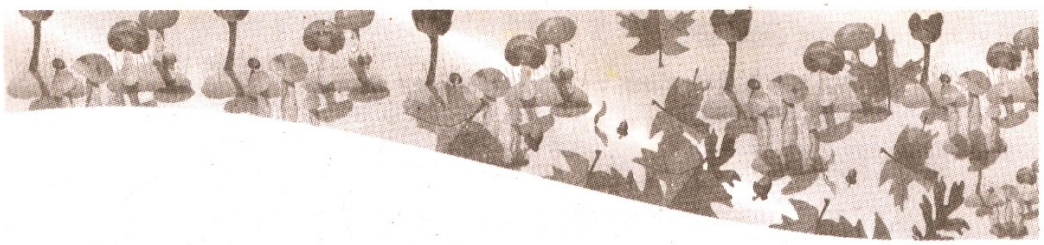

२२

हवन

माँ पीताम्बरा के पूजनोपरान्त अन्त में हवन करना चाहिए। इसे साधक प्रतिदिन का नियम भी बना सकते हैं यदि चाहें तो माह में एक बार अष्टमी के दिन भी होम करना निश्चित कर सकते हैं।

सर्वप्रथम आप संकल्पपूर्वक कुण्ड का निर्माण करें। उसे तीन मेखलाओं से आभूषित करें और उसमें **"ॐ ह्लीं श्रीं"** लिखकर अग्नि का पूजन करें। लकड़ी आदि स्थापित कर, अग्नि प्रज्जवलित करें।

अग्निं प्रज्ज्वलितं वन्दे जातवेद हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।

हाथों में पुष्पांजलि लेकर अग्नि का आवाह्न करते हुए गन्ध पुष्प आदि से पूजन करें–

ॐ ह्लीं श्रीं मूलेन अग्नौ देवी चैतन्यमावाह्य।"

फिर मूल मन्त्र से वाञ्छित आहुति प्रदान करें। भगवती बगला का गन्ध, पुष्प आदि से पूजन करें और निम्नलिखित् मंत्र पढें–

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपा तां नमामि सुरेश्वरीम्।।

फिर भगवती का विसर्जन करते हुए प्रार्थना करें–

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्।।

फिर पुनः अग्नि पूजन करें। होम की भस्म लेकर ललाट आदि स्थानों पर लगायें और प्रार्थना करें–

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन।।
गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थानं कुण्डमध्यत।
हव्यमादाय, देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे।।

साथ ही न्यूनतापूर्ति के लिए प्रार्थना करें–

"ॐ सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वा सप्त ऋषय, सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्त योनीश पृणस्व धृतेन स्वाहा।।"

अन्त में निम्नांकित वाक्य कहकर किया गया हवनकर्म भगवती को अर्पित करें।

"अनेन होमकर्मणा श्री बगलामुखीः प्रीयताम् न मम। श्री पीताम्बरार्पणामस्तु।"

◆ बलिदान ◆

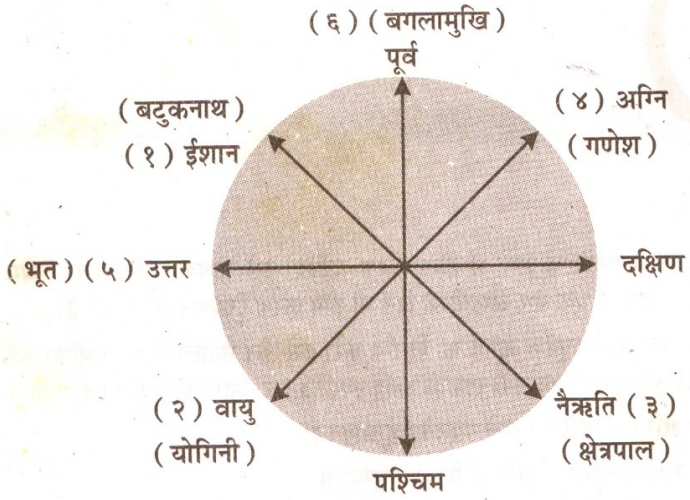

◆ बलि हेतु मुद्राएँ ◆

(१)	**बटुक**	:	अंगूठे को अनामिका से मिलाएं।
(२)	**योगिनी**	:	तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे को मिलाएं।
(३)	**क्षेत्रपाल**	:	अंगूठे को तर्जनी से मिलाएं।
(४)	**गणेश**	:	अंगूठे को मध्यमा से मिलाएं।
(५)	**भूत**	:	सभी अंगुलियों को मिलाएं।

◆ बलिविधान ◆

(१) त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्रमण्डल बनाकर **"ॐ आधार शक्तये नमः"** पूजन करें। फिर बलि पात्र की स्थापना कर **"ॐ बलि द्रव्याय नमः"** कहकर गन्ध, पुष्प आदि से पूजन करें तथा मुद्रा बनाकर बलि स्वीकार करने हेतु बटुक भैरव से प्रार्थना करें–

"एहि एहि देवि पुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वाला मुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृहण गृहण स्वाहा।" बटुकाय एष बलिर्न मम।

(२) **"यां योगिनीभ्यो नमः"** से योगिनिओं की पूजा कर उन्हें, तर्जनी, मध्यमा और अंगूठे से मुद्रा बनाकर, बलि स्वीकार करने हेतु विनती करें–

"ॐ ॐ ॐ सर्वयोगिनीभ्यः सर्वडाकिनीभ्यः सर्वशाकिनीभ्यः त्रैलोक्यवासिनीभ्यो नमः। इमं

पूजाबलिं गृहणीत हुं फट् स्वाहा।" सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा।'' योगिनीभ्यः एष बलिर्न मम।" जल अर्पित कर प्रणाम करें।

(३) **"क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल बलि मण्डलाय नमः, क्षेत्रपाल बलि द्रव्याय नमः।"** ऐसा बोलकर गन्ध पुष्प आदि से क्षेत्रपाल की पूजा करें। अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर मुद्रा बनाएं और क्षेत्रपाल से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहाः, क्षेत्रपालाय एष बलिर्न मम।" जल देकर प्रणाम करें।

(४) **"ॐ गं गंणपतये नमः, गणपति बलिमण्डलाय नमः"** ऐसा बोलकर गन्ध, पुष्पादि से गणपति की पूजा करें। फिर अंगूठे और मध्यमा को मिलाकर मुद्रा बनाएँ, और गणपति से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय इमं बलिं गृहण गृहण स्वाहा।" गणपतये एष बलिर्न मम। जल देकर प्रणाम करें।

(५) पूर्व की भांति मण्डल बनाकर पूजन करें। साधार बलिदान स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–सभी अंगुलियों को मिलाकर मुद्रा बनाते हुए–**ह्लीं सर्वविघ्नकृदभ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा। सर्वभूतेभ्यो एष बलिर्न मम।**

(६) तद्परान्त हाथ पैर धोकर भगवती को योनि मुद्रा का प्रदर्शन करते हुऐ प्रणाम करके आरती कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करें–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

नानासुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वरि॥

पुनः प्रदक्षिणा करके नमस्कार करें। फिर यन्त्र बनाकर पूजन करें और बलि स्थापना कर भगवती से बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं हूं ह्लीं बगलामुखि सर्वशत्रु स्तम्भिनी सर्वराज वशङ्करी एष ते बलिं गृहण गृहण ममाभीष्ट कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा। बगलाय एष बलिर्न मम।" ऐसा कहकर भगवती को विशेष अर्घ्य प्रदान करें। (शहद, मिश्री, गाय का दूध, केसर व अदरक से मिलकर विशेष अर्घ्य बनता है)

(७) अब उच्छिष्टभैरव को बलि प्रदान करें–

"ॐ उच्छिष्ट भैरव एहि एहि बलिं गृहण गृहण हुं फट् स्वाहा।" और प्रणाम करें।

(८) अब पूजा गृह से बाहर जाकर बटुकवाहन को बलि प्रदान करें– एक चतुरस्रमण्डल बनाकर उसमें बलि रखकर बटुक वाहन को प्रदान करें–

"बटुक वाहन इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।" तथा जल छिड़कें।

तद्परान्त हाथ, पैर धोकर पूजागृह में प्रवेश कर आसन पर बैठकर आचमन कर शान्ति पाठ करें। फिर निर्माल्य सहित नैवेद्य की बलि प्रदान करने हेतु उच्छिष्ट चाण्डालिनी का ध्यान करें तथा बलि स्वीकार करने हेतु प्रार्थना करें–

"ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालिनि मातङ्गिसर्वजनवशङ्करी इमां पूजां बलिं च गृहण गृहण स्वाहा।"

फिर हाथ धोकर भगवती से प्रार्थना करें–

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

यथाशक्ति, यथाज्ञानेन, यथासम्भावितोपचारद्रव्यै समस्त कर्मणा श्री पीताम्बरार्पणमस्तु। ॐ तत् सत्।

卐 卐 卐

About The Author

Name :- **Shri Yogeshwaranand Ji**
Mb :- **+919917325788, +919675778193**
Email ;- **shaktisadhna@yahoo.com**
Web : **anusthanokarehasya.com**

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi Download Click Here

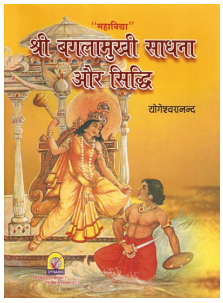

2. **Mantra Sadhna** Download Click Here

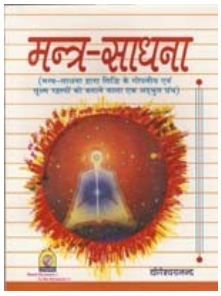

3. **Shodashi Mahavidya** Download Click Here